स्वास्थ्य रिपोर्ट

प्रियवर पाण्डे जी,

स्वस्थ शरीर ईश्वर प्रदत्त सबसे बड़ी नियामत होती है। भारतीय धर्मग्रथों के अनुसार बीमारियां हमारे पूर्वजन्मों के कर्मों का परिणाम होती हैं। जन्म के समय ग्रहों की स्थिति यह निर्धारित करती है कि आगे के भावी जीवन में हम ग्रहों का कितना और किस अनुपात में आशीर्वाद प्राप्त कर पाएंगे। हमारी जन्मपत्रिका हमें जीवन में आने वाली क्षति, संभावित रोग, दुर्घटना की प्रवणता और चोट आदि के संबंध में संकेत देती है। लोक कहावत है कि – **'इलाज से बचाव अच्छा होता है,'** इसलिए हमें आने वाली समस्याओं के बारे में कम से कम उपाय तो कर ही लेना चाहिए। साथ ही जन्मपत्रिका से हमारे जीवन में आने वाले तनावग्रस्त क्षणों का भी संकेत मिल जाता है। इस स्वास्थ्य रिपोर्ट में हम आपकी प्रतिरोधक क्षमता, समुचित आहार–विहार और स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली आदतों, जीवन में आने वाले संभावित दुखों, स्वास्थ संबंधी प्रतिकूल समय और अच्छे स्वास्थ्य के लिए सावधानियां और उपायों पर विस्तृत विश्लेषण करेंगे। पूर्ण विश्लेषण के लिए हम निम्नलिखित बिन्दुओं का सहारा ले रहे हैं :

1. लग्न और लग्नेश का विश्लेषण।
2. चंद्रमा की नक्षत्रों में स्थिति।
3. राशिचक्र में चंद्रमा की स्थिति।
4. ग्रहों की विशिष्ट अवस्था।
5. छठे भाव से आने वाले रोग और प्रभावित भाव और राशि।
6. भावी कालावधि का विश्लेषण।
7. ज्योतिष उपाय।

लग्न और लग्नेश का विश्लेषण :

आपके जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि आपका जन्म लग्न होता है। लग्न और लग्न का स्वामी आपके शरीर की संरचना, आपकी आंतरिक शक्ति, स्वास्थ व प्रतिरोधक क्षमता का निर्धारण करते हैं।

मीन राशि – इस जलीय राशि के प्रभाव के अधीन आप संवेदनशील हृदय और भावनात्मक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। ये सर्वाधिक शुभ ग्रह बृहस्पति द्वारा अधिशासित राशि है। इसके कारण आप धार्मिक और आध्यात्मवादी स्वभाव के हैं। जब कोई आपसे अपेक्षा या आशा करता है तो आप उसे उदारता पूर्वक सहयोग देते हैं परंतु यदि इस स्नेह और आत्मीयता का आदान–प्रदान नहीं होता है तो आप अपनी अनदेखी और तनावग्रस्त महसूस करने लगते हैं। आपकी कल्पनाओं की उड़ान असीमित, बहुआयामी और विशाल है। इतनी अच्छी कल्पनाशक्ति के कारण आप नवीन रहस्यों और तथ्यों तक पहुंच सकते हैं जो दूसरों की पहुंच से बाहर होते हैं। चूंकि आप गंभीर संवेदनशील व्यक्ति है। इसलिए आप पूरी तरह सावधान रहते हैं

कि आपसे किसी की भावनाएं आहत ना हो और यदि किसी कारणवश ऐसा हो जाए तो आप अपराध बोध महसूस करते हैं। आप अपनी बहुआयामी कल्पनाओं के कारण अपनी दुनिया खुद ही बनाते हैं जो परिकथाओं से भी बड़ी होती हैं और जीवन की वास्तविकताओं से दूर अर्थात् हवाई किले बनाना आपका स्वभाव है। आप ऐसी समालोचना का भी विश्लेषात्मक प्रस्तुतिकरण कर सकते हैं जिस पर आपकी पकड़ भी नहीं है। आपकी समझ बहुत अच्छी है और आप अपने आसपास के लोगों की मानसिकता को आसानी से जान लेते हैं परंतु आप प्राय: उनके साथ समायोजित नहीं हो पाते। आपकी कल्पनाओं की उड़ान के कारण आपको मानसिक दबाव महसूस करने पड़ते हैं।

आप ईश्वर में गहन विश्वास करते हैं जिसके कारण आध्यात्म और दर्शन शास्त्र में आपकी गहरी पैठ होती है। इस आत्म प्रकाश के कारण आप एक अच्छे परामर्शदाता बन जाते हैं। अध्यापन आपकी अभिरुचि का विषय है। आप सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भ्रमण के शौकीन हैं जिसके कारण आप स्वच्छ और स्वतंत्र प्रवृत्ति के व्यक्ति बन जाते हैं। जलप्रधान क्षेत्रों के पास जाना आपको अच्छा लगता है। आपकी प्रकृति में संवेदनशीलता कई बार आपको कठिन परिस्थितियों में डाल देती है। अपनी काल्पनिक दुनिया में रहने की आपकी आदत के कारण जीवन की वास्तविकताओं को स्वीकार करना आपके लिए कठोर हो जाता है। जब आप इस भौतिक संसार में असहज महसूस करते हैं तो आपका आत्मविश्वास गड़बड़ा जाता है और आप निर्णय लेने में प्राय: दूसरों की सहायता लेने लगते हैं। आपकी प्रबल संवेदनशील भावनाएं आपको कई बार ईर्ष्या की हद तक स्वार्थी बना देती हैं। यदि आपको कोई भावनात्मक चोट पहुंचाए तो आप में विघ्वंसात्मक प्रवृत्तियां जन्म लेती है जो बहुत घातक सिद्ध हो सकती हैं इसलिए आपको व्यावहारिक पक्ष को समझ लेना चाहिए।

लग्नेश की स्थिति : आपके लग्नेश देवगुरु बृहस्पति जन्मकुण्डली के द्वादश भाव में स्थित होकर वक्री हैं। वक्री बृहस्पति वक्री बुध को देख रहे हैं और इससे आपको माता संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। माता से संबंधित चिंताएं आपको बार-बार प्रभावित करेंगी। वास्तव में यह कोई बीमारी नहीं है परंतु आप हर समय माता के इलाज पर चिंतन करते रहेंगे। तनाव की स्थिति में आपमें कई बार असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो सकती है। निराशाओं के ये बादल कुछ ही समय रहेंगे और कुछ समय बाद जब कहीं से आपको शुभ समाचार मिलेंगे तो यह बादल स्वत: छंट जाएंगे। आप मनोवैज्ञानिक रूप से शक्तिशाली हैं तथापि परिस्थितियां आपको निराशा के घोर अंधकार में ले जाती हैं। कुछ भी हो आपको ज्योतिष सलाह दी जाती है कि संदेह की दुनिया से बाहर निकले, संदेहों का जीवन में कोई आधार नहीं होता।

आपके अष्टम भाव के स्वामी शुक्र वृष राशि में स्थित हैं जिनका षष्ठेश शनि से कोई संबंध नहीं है। ग्रहों का यह संयोजन संकेत देता है कि आपके बीते हुए जीवन में कोई गंभीर बीमारी नहीं लगी है इसलिए स्वास्थ संबंधी जो भी समस्या आएगी, समय रहते हुए उसका निदान भी हो जाएगा।

चंद्रमा की नक्षत्र में स्थिति :

पूर्वाभाद्रपद - आप आशावादी हैं और आपका व्यक्तित्व रहस्यों से भरा हुआ है। इस नक्षत्र पर शनि और बृहस्पति का प्रभाव होता है। अभिव्यक्ति की कला आपकी शक्ति है और इस कला से आप धन

कमाना जानते हैं। आप भविष्य दृष्टा हैं और आपके सामने स्पष्टभावी दिशा होती है। पराधीनता से आप घृणा करते हैं। उर्वर मस्तिष्क और दार्शनिक बुद्धि के कारण आप नवीन और मूलभूत सत्य में विश्वास करते हैं। आप स्वयं निष्ठावान हैं और परिश्रम करने वाले लोगों को पसंद करते हैं। आपको जो भी कार्य दिया जाता है आप उसे पूरा करते ही दम लेते हैं। वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए आप नकारात्मक क्षेत्रों में भी कार्य करने से नहीं हिचकिचाते। आपके व्यक्तित्व में प्रबल निष्ठावादिता का गुण प्रशंसनीय है जिसके कारण आप दूसरों का सम्मान कर पाते हैं। आप अपने चहेतों को कुछ भी दे सकते हैं। आपमें किसी भी वातावरण और माहौल में कार्य करने की अद्‌भुत क्षमता निहित है। आपके मस्तिष्क में एक साथ कई विचार चल रहे होते हैं। आप सामान्यत: अपने रोजमर्रा के कार्यों का विश्लेषण करते हैं। एक अच्छे समालोचक होने के नाते आप अपने बुरे कार्यों की स्वयं समालोचना करते हैं और उन पर पश्चाताप करते हैं।

आप में बदलाव लाने की अद्‌भुत शक्ति छिपी हुई है। आपमें सकारात्मक मानवीय गुण यह है कि आप अपनी छिपी हुई शक्ति को लाभप्रद ऊर्जा और अद्‌भुत कला में बदल सकते हैं। आपकी क्रांतिकारी प्रकृति और अस्पष्ट विचारों के कारण आप अशांत हो जाते हैं और कभी-कभी बुरी आदतों में फँस जाते हैं। इनसे बाहर निकलने के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ता है। कई बार आप भावनाओं से बुरी तरह से ग्रसित हो जाते हैं और बदला लेने की प्रवृत्ति को जन्म देते हैं। जीवन के अंधकारमय पहलू से आप परिचित हैं और आप उसका प्रयोग करते हैं चाहे वह हिंसा से परिपूर्ण हो। कठोर भावनाएं कई बार नकारात्मक परिणाम दे जाती हैं।

राशिचक्र में चंद्रमा की स्थिति :

कुंभ स्थित चंद्रमा - कुंभ स्थिर राशि है जिसके स्वामी शनिदेव हैं। इस राशि में स्थित आपके चंद्रमा के कारण आपको जीवन में अचानक परिणाम मिलेंगे अर्थात् कई बार आप जीवन की शीर्ष ऊँचाइयों पर होंगे तो कभी एकदम गर्त में। आप कलात्मक प्रवृत्ति के और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आपमें प्रबल इनट्यूशन पावर है जिसके कारण आप शक्ति प्राप्त कर लेते हैं और अपने व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देते हैं। आपके विचार और योजनाएं बहुत अच्छी होती हैं परंतु आप कार्यों को करने में आलस्य करते हैं।

आप भौतिक जीवन की विलासिताओं और सुख-सुविधाओं के बेहद शौकीन है तथा शुक्र देव आपके प्रयासों में बहुत आर्थिक लाभ देते हैं। आप यह भलीभाँति जानते हैं कि आप जो भी अभिलाषा करते हैं तथा आप दृढ़-निश्चय भी हैं कि आप उसे धैर्यपूर्वक प्राप्त कर ही लेते हैं। आप मित्रवत और सामाजिक स्वभाव के हैं जो भी आपके संपर्क में आता है आपका अच्छा मित्र बन जाता है, एक अच्छा साझेदार व अच्छा मित्र भी। आप वाणी में संजीदगी बरतते हैं और विनम्र भाषा का प्रयोग करते हैं। आप लोगों पर अधिक संदेह नहीं करते इसलिए लोगों के लिए आपकी नीति होती है कि **'प्रयास करो और सिद्ध करो अथवा मित्र या साझेदार बनो'**। आप अच्छे व्यक्तियों के आने की प्रतीक्षा करते हैं और उन्हें आराम तथा सुरक्षा प्रदान करते हैं। आप सौन्दर्य और यथार्थ के सच्चे प्रशंसक है। आपको अपने आँख, गला और गर्दन के संबंध में सावधान रहना चाहिए।

मिथुन में बुध - मिथुन वायु तत्व प्रधान एवं द्विस्वभाव की राशि है जिसके स्वामी युवराज ग्रह बुध हैं। वाणी के कारक ग्रह बुध आपकी जन्मकुण्डली में स्वराशि मिथुन में स्थित हैं जो आपकी बातूनी और अहंकारी बनाते हैं। आप प्राय: आत्म-प्रशंसा के शिकार होते रहते हैं। आपकी माताजी आपकी पक्षधर रहेंगी।

आपकी आय के कई साधन होंगे। आप सक्रिय और चतुर व्यक्ति हैं और सुविधा के साधन आसानी से जुटा लेते हैं। आपको शारीरिक परिश्रम करने में कोई हिचक या झिझक नहीं होती। आप एक भावना प्रधान और अच्छे कवि हो सकते हैं।

आप सुन्दर वस्त्र और स्वादिष्ट व्यंजनों के शौकीन हैं। आप स्वतंत्र विचार रखते हैं। आप तर्क-वितर्क करने में माहिर हैं। आप ज्योतिष विद्या के माध्यम से धनार्जन कर सकते हैं।

छठे भाव, दूषित भाव और राशि चक्र से रोग :

वैदिक ज्योतिष रहस्योद्घाट्न करती है कि रोग उन राशियों में छिपे रहते हैं जो पाप ग्रहों के कुप्रभाव में रहती हैं। रोगों की जानकारी आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित राशि से प्रमुखता से मिलती है और आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में सिंह राशि स्थित है जो पेट और पेट के नीचे के अंगों में रोग का संकेत देती है। आपके गले में भी रोग उभर सकता है। इसके साथ ही मंगल पर राहु की दृष्टि के कारण आपके रक्त में भी विकार हो सकते हैं। इन सभी के यह कारण ऐसा बिल्कुल नहीं है कि ये सभी रोग आदि एक साथ प्रकट होंगे। जीवन के दीर्घकाल में ये ग्रहों की विपरीत और प्रतिकूल चाल के समय प्रकट होंगे।

निकट भविष्य की स्थिति :

आप भावना प्रधान व्यक्ति हैं और दूसरों की भावनाओं को भी समझते हैं। आप दूसरों की संवेदनाओं को गंभीरता से महसूस करते हैं। आपका शत्रु पक्ष प्रबल रहता है और आप प्राय: चिंताओं और दु:खों से ग्रसित रहते हैं। आपको अपने एकाकी और अकेलेपन की भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा जो आप पर हावी रहती हैं और आप इनके कारण तनाव में रहते हैं।

आप किसी हस्तकला में निपुण हो सकते हैं। इस कला में आप नवीनीकरण करते रहते हैं। आपको अपनी कला के प्रदर्शन के लिए आलस्य और सुस्ती का त्याग करना होगा।

कुंभ राशि में बृहस्पति देव से युति कर रहे चंद्रमा, मंगल पर दृष्टि डाल रहे हैं जो आपको अच्छा स्वास्थ्य तो देते हैं परंतु कई बार सामयिक समस्याएँ भी उत्पन्न कर देते हैं। ये समस्याएँ आपके शरीर में जलतत्व या रक्त संबंधी हो सकती हैं। इन सबके साथ बुध ग्रह की महादशा आपके शरीर में जीवाणु दूषण या चर्म रोग होने का संकेत देती है। भविष्य में ये समस्याएँ आपके बच्चों की समस्याओं से भी जुड़ सकती हैं।

ग्रहों की विशेष स्थिति :

नीच राशिस्थ मंगल (कर्क राशि) - कर्क चर एवं जल तत्व राशि है और चंद्रमा इसके स्वामी हैं जो भावना प्रधान ग्रह हैं। अग्नि तत्व प्रधान ग्रह मंगल आपकी कुण्डली में जल तत्व **कर्क राशि** में

स्थित हैं। इसके कारण आप चंचल और अस्थिर मस्तिष्क के हैं। आप बहुत कल्पना प्रवण हैं इसलिए कल्पनाओं की दुनिया में उड़ान भरते रहते हैं। पारिवारिक जीवन के प्रति आपका गंभीर जुड़ाव रहता है परंतु आप वैयक्तिक स्वतंत्रता के पक्षधर हैं। आप साहसी और निर्भीक हैं इसलिए आप अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह भी कर बैठते हैं। आप जल या जलीय यंत्रों से धनार्जन कर सकते हैं।

वृष में स्थित शुक्र ग्रह :

वृष स्थिर स्वभाव, पृथ्वी तत्व राशि है जिसके शुक्र स्वामी हैं। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र स्वराशि स्थित हैं जो आपको शक्तिशाली, गहरी भावनाएँ, सरल और प्रणय में गंभीर, सहजता और निष्ठा जैसे गुण देते हैं।